# बस की यात्रा

---

**पाठ का सार / प्रतिपाद्य –**

लेखक 'हरिशंकर परसाई' द्वारा रचित कहानी 'बस की यात्रा' हास्य एवं व्यंगपूर्ण है। इस कहानी में लेखक और उनके पाँच मित्र किसी यात्रा पर निकलते हैं। वो जिस बस से यात्रा करते हैं उस बस की हालत अत्यंत दयनीय होती है। लेखक द्वारा बोले गए व्यंग्य कहानी को अधिक रोचक बनाते हैं। बस के यात्रियों को यात्रा करते समय इस बात का भरोसा ही नहीं हो पाता कि वे कभी अपने निर्धारित स्थान तक पहुँच भी पाएँगे या नहीं। यहाँ तक कि लेखक ने बस की तुलना एक वृद्ध औरत से भी कर दी जिसकी हालत इतनी खराब है कि वो ठीक से चल भी नहीं सकती। रास्ते के बीच में ही वह बस खराब हो जाती है और उसे ठीक करना पड़ता है। लेकिन फिर भी लेखक और उनके मित्र इतनी कठिनाइयों के बावजूद भी यात्रा का आनंद लेते हुए अपनी मंज़िल की ओर बढ़ते चले जाते हैं।

**बस की विशेषताएँ –**

1. अनुभवी
2. पुरानी
3. दयनीय स्थीति
4. श्रद्धेय
5. विश्वसनीय

**बस मालिक की चारित्रिक विशेषताएँ –**

1. आशावादी
2. अत्यधिक आत्मविश्वासी
3. बुद्धिमान
4. वाक् चतुर

**लेखक की चारीत्रिक विशेषताएँ –**

1. व्यंगात्मक बातों के धनी
2. सहनशील
3. कल्पनाशील
4. हँसमुख

**पाठ का उद्देश्य -**

प्रस्तुत पाठ हास्य प्रधान है। लोगों के मन में सुख की अनुभूति कराना का ही पाठ का उद्देश्य है।

**पाठ का संदेश -**

प्रस्तुत पाठ के माध्यम से लेखक ने मुश्किल परिस्थितियों में भी खुश रहने और हँसते हँसाते उसका सामना करने का संदेश दिया है।